International Journal of Creative Research Thoughts
Volume 1, Issue.8, August 2013 ISSN:-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

संतों की भक्ति का समाज पर प्रभाव

सन्दीप कुमार नामदेव
शोध छात्र अ.प्र. सिंह वि.वि. रीवा (म.प्र.)

अजीत कुमार द्विवेदी
शोध छात्र अ.प्र. सिंह वि.वि. रीवा (म.प्र.)

1. सार :–

संत इस धरती के आदर्श हैं, उनसे जीवन जीने की कला सीखी जा सकी है, सांसारिक प्रेम ही ईश्वरीय प्रेम का रास्ता है। जो इस संसार के समस्त प्राणियों के दुःख दर्द को समझता है, वही ईश्वर को भी समझता है। संतों की भक्ति में सांसारिक उत्थान का समन्वय होता है इसी कारण से संतों की भक्ति एवं विचारों का प्रभाव समाज पर पड़ता है। संतों की वाणी समाज के सर्वांगीण विकास के लिए संजीवनी औषधि का कार्य करती है। संतों ने अपनी वाणी द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति विद्रोह का कार्य किया। उन्होंने जाति या धर्म को नहीं, बल्कि नैतिक शुद्धता पर बल दिया। संतों के साहित्य का मुख्य उद्देश्य भक्ति था, लेकिन उस भक्ति के साथ ही सहायक भावमयी संगीत एवं नृत्य आदि कलाओं का विकास हुआ। संतों ने भक्ति पद्धति में 'नाम–स्मरण' को श्रेष्ठ बताया। संतों ने भ्रमण करके समूचे भारत में ज्ञान की धारा बहायी, जैसे–संत नामदेव, रामानंद, कबीर एवं रैदास आदि कवियों ने तीर्थ यात्रा तथा भ्रमण के दौरान नर–नारियों को अपनी भावमयी वाणी के आलोक में आदर्श का रास्ता दिखाया।

निष्कर्षतः संत साहित्य वह ज्ञान की धारा है, जिसमें सामाजिक उत्थान की लहरें बराबर उठती रहती हैं। उन्होंने सामाजिक एकता एवं नैतिकता को खूब बढ़ावा दिया।

2. प्रस्तावना :–

"संत हृदय नवनीत समाना, कहा कविन्ह पै कहै न जाना।
निज परिताप द्रवै नवनीता, पर दुःख द्रवै सुसंत पुनीता।।"

अर्थात् गोस्वामी तुलसीदास जी ने संतों के हृदय को मक्खन से भी कोमल माना है, क्योंकि मक्खन तो स्वयं के ताप से पिघलता है जबकि परम पवित्र संत दूसरों के दुःख से पिघल जाता है। संतों का यह स्वभाव उनको इस जगत का उद्धारकर्ता सिद्ध करता है, जो मनुष्य, मनुष्य से प्रेम करना जानता है वही ईश्वर से भी प्रेम करना जानता है। जो इस संसार के समस्त प्राणियों के दुःख दर्द को समझता है, संतों की भक्ति में सांसारिक उत्थान का समन्वय भी होता है इसी कारण से संतों के उच्चादर्शों, उच्च विचारों एवं अंतस्तल की पवित्रता का प्रभाव समाज पर पड़ना स्वाभाविक है।

संतों की भक्ति में ईश्वर के एक होने पर जोर दिया जाता है। उनका मानना है कि ईश्वर एक है और संसार के समस्त प्राणी उसी ईश्वर के अंश हैं। यदि किसी जीव को कष्ट दिया जाता

है, तो इसका मतलब यह है कि ईश्वर को कष्ट दिया जा रहा है, जो इस घृणित कार्य के लिए कभी भी माफ नहीं करेगा। संतों के उपर्युक्त विचारों से समाज में सात्विक विचारों का बीजारोपण होता है।

संतों की वाणी समाज के सर्वांगीण विकास के लिए संजीवनी का कार्य करती है। मलूकदास जी ने कहा है कि –

''तेड–तेड नगर उजाड हैं, जहाँ साधु ना हीं।''

(अर्थात् जहाँ संत नहीं होते वह नगर उजाड़ हो जाता है।) वास्तव में संत महान होते हैं क्योंकि वे भौतिक संसार को समस्त संतापों से मुक्त कराने में लगे रहते हैं।

3. विवेचना :–

संतों की भक्ति का प्रभाव समाज के विभिन्न पहलुओं पर पड़ा। संतों ने धर्मान्धता, रूढ़ियों का अंधानुकरण, जातिगत भेदभाव, सम्प्रदायगत कट्टरता आदि विघटनकारी प्रभावों के प्रति विद्रोह किया। उन्होंने मानव की श्रेष्ठता का मूल्यांकन उसके सदाचार के आधार पर किया। उन्होंने व्यक्ति एवं जाति को नहीं बल्कि उनकी नैतिक शुद्धता पर बल दिया। फलस्वरूप समाज में नैतिकता का विकास हुआ। डॉ. राधाकृष्णमूर्ति भी इसे स्वीकारती हैं ''इस तरह पतित लोगों के लिए संत वाणी परम संजीवनी औषधि के समान शांतिदायिनी होकर उनकी निराशा एवं दुःख का हरण करके उत्साहपूर्ण जीवन बिताने का अमर संदेश देती हैं।''[3]

संत काव्य साधनापरक एवं लोक मंगल का काव्य है। संतों के साहित्य का मुख्य उद्देश्य भक्ति था, लेकिन उस भक्ति के साथ ही सहायक भावमयी संगीत एवं नृत्य आदि विभिन्न कलाओं का विकास भी हुआ। इस विकास के लिए संतों का योगदान महत्वपूर्ण हैं। डॉ. नगेन्द्र भी इसे स्वीकारते हैं, यथा– ''संत काव्य का लक्ष्य था–सामान्य अशिक्षित जनता में सत्य का निरूपण करना, करनी–कथनी में तारतम्य पर बल देना तथा 'नाम' के माधुर्य को जनता तक पहुँचाना।''[4] डॉ. नगेन्द्र के वक्तव्य से स्पष्ट है कि समाज में जितनी भी पूजा–अर्चना से संबंधित क्लिष्ट क्रियाएँ थीं, उनकी पुरजोर भर्त्सना हुई एवं भक्ति की सहज पद्धति 'नाम–स्मरण' को सरल एवं श्रेष्ठ बताया गया।

संतों का जीवन गंगा की पवित्र धारा के समान पवित्र रूप से बहता रहता है। लगभग सभी संतों ने अपने जीवन में सम्पूर्ण भारत का कई बार भ्रमण किया एवं अपने उपदेशों से समाज के सभी वर्गों को ज्ञान एवं दिशा दी। जैसे–संत नामदेव, कबीर, रैदास, गुरूनानक आदि ने अपनी भक्तिमयी वाणी के आलोक में नर एवं नारी सभी के लिए समाजोपयोगी आदर्शों को स्थापित किया।

आज समाज में जों ऊँच–नीच, जाति–पाँति एवं छुआछूत जैसे भाव मिट रहे हैं, उसमें संतों की वाणी का बहुत योगदान है। संत रैदास ने समझाते हुए कहा –

''जुगलिया चाम का सारा।

बता रे मिश्रा कौन चाम से न्यारा।।
चाम की माता, चाम के पिता, चाम का जननहारा।।
चाम की गाय, चामरा बछड़ा, चाम का दुहनहारा।
चाम का ऊँट, चाम का नगाड़ा, चाम का बजावन हारा
चाम का हस्ति, चाम का घोड़ा, चाम का जगत व्यवहारा।।
कह रविदास सुनो रे विप्रो–जो चाम से न्यारा सो गुरू हमारा।।''[5]

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि संत रैदास ने विभिन्न उपमाओं द्वारा एक तत्व की सर्वव्यापकता सिद्ध की है।

समाज में फैले अंधविश्वास, खासतौर से मूर्तिपूजा, पुनर्जन्म आदि को लेकर जो मूढ़ धारणा समाज में फैलायी गयी थी, उन्हीं की प्रतिक्रिया स्वरूप संत कबीर की निम्न काव्य पंक्तियाँ प्रसिद्ध हैं, जो सारी भ्रांतियों को मिटा देती हैं–

''मैं कहता हैं आँखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी।
मैं कहता सुरझावन हारी तू राख्यो उरझाई रे।''[6]

उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ स्वयं कबीरदास जी के जीवन शैली की परिचायक थी।

संत साहित्य वह भाव धारा है जिसमें सामाजिक उत्थान की लहरें बराबर उठती रही हैं। संत साहित्य अनंतकाल तक रहने वाला कालजयी साहित्य है, जिसका ज्ञान पुंज चिरंतनकाल तक मानव समाज को विकास एवं सौहार्द्र का रास्ता दिखाने वाला है, साबरमती के संत ने कोई पंथ या मत नहीं चलाया लेकिन जो उनके सत्य एवं अहिंसा पर आधारित उपदेश थे, वे भारत भूमि के लिए गीता के उपदेश थे। कविवर भवानी प्रसाद मिश्र ने गाँधी जी की कमी को निम्न पंक्तियों में व्यक्त किया–

''तुम्हारा चला जाना/जैसा जला जाना
प्रलय काल के सूरज का
देश की हरियाली को
तब से कुछ नहीं भर पाया है
इस खाली को
जहाँ नजरें जाती हैं, सिर्फ दुःख उठाती हैं
सुख कहीं नहीं मिलता''[7]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि संतों की भक्ति का समाज पर वास्तविक प्रभाव पड़ा जिसे नकारा नहीं जा सकता।''

4. उपसंहार :–

आधुनिक युग में भी भारत–भूमि संतों से भरी पड़ी हैं, जिनके ज्ञान एवं भक्ति के संयोग से सांसारिक मनुष्यों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिली। संतों ने सामाजिक एकता एवं नैतिकता को खूब बढ़ावा दिया, जिससे निम्न जाति के लोगों का हीन भावना समाप्त हुआ। साथ ही स्त्रियों को भी समाज में समान अधिकार एवं सम्मान प्राप्त हुआ। संतों की मंगलमयी वाणी के आलोक में भक्ति–भावना का समान रूप से पल्लवन हुआ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. रामचरितमानस –तुलसीदास, पृ. 1024, गीता प्रेस गोरखपुर 273005, गोविन्द भवन कार्यालय, कोलकाता का संस्थान।
2. मलूकदास की वाणी –बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स इलाहाबाद, पृ. 30
3. दक्षिणी भारत की संत परंपरा– डॉ. राधाकृष्णमूर्ति, पृ. 474, प्रकाशक : कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति 1784 मेन रोड, चामराज पेट, बेंगलोर–560018
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास–सं. डॉ. नगेन्द्र, पृ. 141, प्रकाशक : मयूर पेपर बैक्स, ए–95, सेक्टर –5 नौएड़ा– 201301
5. संत रविदास– एम.एस. शर्मा, पृ. 16 प्रकाशकः नई सदी बुक हाउस ए–7, कामर्शियल काम्प्लेक्स, मुखर्जी नगर दिल्ली 110009
6. कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. 247 प्रकाशक : राज कमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 1–बी नेजाती सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002
7. आजकल अप्रैल 2013 – सं. फरहत परवीन–पृ. 13 प्रकाशन विभाग – सूचना भवन सी.जी. ओ. काम्पलेक्स, लोदी रोड नई दिल्ली– 110003 फोन : 24362915